रमेश बक्षी

अफ्रीका की लोककथाएं

अफ्रीका की लोककथाएं

रमेश बक्षी

सज्जा : प्रणब चक्रवर्ती

राजपाल एण्ड सन्ज़,
कश्मीरी गेट, दिल्ली

अनुक्रम

1. अतिमानव और अतिदानव	3
2. पशु-पक्षियों की भाषा	8
3. चालाक मकड़ा	12
4. कद्दूराम	15
5. उवुंगलमा	18
6. आकाश-नसैनी	22
7. जलता जूजू : उड़ता बाज़	26
8. खोई हुई अंगूठी	31
9. नागराज और दो बहनें	35

मूल्य : पांच रुपये (5.00)

प्रथम संस्करण 1980 © राजपाल एण्ड सन्ज़, AFRICA KI LOK KATHAEN (Folk Tales) by Ramesh Baxi

अतिमानव और अतिदानव

बरसों पहले की बात है। अफ्रीका में एक ऐसा आदमी रहता था जिसका विश्वास था कि वह सारी दुनिया में सबसे अधिक बहादुर है। वह जब लकड़ी का बोझ उठाकर लाता तो उसका गट्ठर इतना बड़ा होता कि कोई दूसरा आदमी उसे नहीं उठा सकता था। एक दिन वह जब लौटा तो घर आकर उसने अपना भारी बोझा दरवाज़े पर डाल दिया और अपनी पत्नी शेटू को पुकारकर कहा, "देख, मैं क्या लाया हूं। अब तो तुझे मान लेना होगा कि मैं मानव नहीं, अतिमानव हूं।"

पत्नी हंस दी और बोली, "बड़े आए अतिमानव। अगर तुम सचमुच किसी अतिमानव को देख लोगे तो भाग खड़े होओगे।"

उत्तर में उसने कहा, "तुम्हारी बात झूठ है। मुझसे अधिक बलवान कोई नहीं हो सकता। अगर कोई है तो मुझे दिखाओ।"

दिन बीतते गए। वह आदमी रोज़ अपने-आपको 'अतिमानव' कहता। उसकी पत्नी उसकी बात सुनकर केवल हंस देती। एक दिन घर में पानी खत्म हो गया तो वह जंगल में कुएं पर पानी भरने गई। वहां जाकर उसने बाल्टी कुएं में डाली, लेकिन भरी हुई बाल्टी उससे बाहर खिची ही नहीं। उसे लग रहा था कि कम से कम दस आदमी हों तभी वह बाल्टी कुएं से बाहर निकाली जा सकती है। वह हारकर घर लौटने लगी कि रास्ते में एक और औरत मिल गई। वह बोली, "बहन, तुम खाली घड़ा लेकर क्यों लौट रही हो?"

शेटू ने दुःखी होकर सारा किस्सा सुना दिया। वह औरत बोली, "चलो तो, एक बार और कोशिश की जाए।"

वे दोनों कुएं पर फिर आ गईं। दूसरी औरत ने कंधे पर बंधे अपने बच्चे

को उतारा और उससे कहा कि बाल्टी खींच दे। शेटू देखती रह गई कि उस नन्हे-से बच्चे ने अपनी अंगुली से बाल्टी बाहर खींचकर रख दी। जब वे दोनों लौट रही थीं तो शेटू ने पूछा, "तुम कहां रहती हो और तुम्हारा पति कौन है?" उस औरत ने उत्तर में बतलाया कि उसके पति का नाम अतिमानव है और यह बालक उसका लड़का है।

अब तो घर आकर शेटू ने अपने पति को सुनाया कि वह आज असली अतिमानव से मिली है और उसका बच्चा इतना बहादुर है जितना शायद ही कोई हो। शेटू का पति हंस दिया, "अच्छा, तो और भी कोई अपने-आपको अतिमानव कहता है! मैं भी देखता हूं कि उसमें कितनी ताकत है! चलो तुम, और बताओ कि वह ढोंगी आदमी कहां रहता है!"

शेटू ने घड़ा उठाया और कुएं की तरफ चली। उसने बाल्टी डाली और अपने पति से कहा कि उसे खींचे। उसने बड़ी कोशिश की, वह हांफने लगा, उसका पसीना छूट गया, लेकिन वह बाल्टी कुएं से बाहर नहीं निकाल पाया।

तभी वही औरत वहां आ पहुंची। उसके बच्चे ने उसी तरह एक अंगुली के इशारे से बाल्टी बाहर निकाल कर रख दी। शेटू ने कहा, "अब तो विश्वास हुआ न! जिसका बच्चा इतना ताकतवर हो वह स्वयं कितना शक्तिशाली होगा?"

लेकिन शेटू का पति बोला, "मैं उसे जाकर देखूंगा। उसे देखे बिना मैं रह नहीं सकता।"

उस शेर बच्चे की मां ने कहा, "मेरे पति से अगर तुम न मिलो तो ही भला है। कभी उसने तुम्हें देख लिया तो वह तुम्हें कच्चा चबा जाएगा।"

लेकिन उस आदमी का दभ नहीं माना। वह उस औरत के साथ चला। घर पहुंचकर उसने कहा, "अभी मेरा पति शिकार के लिए गया है। तुम दरवाज़े के पीछे छिप जाओ।"

"नहीं, मुझे छिपने की कोई आवश्यकता नहीं। मैंने उस जैसे कई देखे हैं।" उस आदमी ने अकड़कर उत्तर दिया।

तब वह बोली, "भले आदमी, बात मान जा। ज़रा सोच तो सही, वह पूरा एक हाथी नाश्ते में ही खा जाता है और दस हाथी उसे खाने में चाहिए। अब तो समझ मूर्ख आदमी।"

उसे थोड़ा-सा डर लगा और वह कूड़ादान के पीछे छिपकर बैठ गया।

थोड़ी देर के बाद भयंकर आंधी चलने लगी और पेड़ उखड़ कर गिरने लगे। पत्नी बोली, "यह आंधी उसके सांस लेने से चल रही है। अब वह आ ही रहा है।"

कुछ देर बाद एक दैत्याकार आदमी वहां आया और पूछने लगा कि खाना बना या नहीं। उसकी पत्नी ने कहा बन गया। वह फिर हाथी खाने के लिए बैठ गया। वह उसकी हड्डियां इस तरह चबा रहा था, जैसे हाथी गन्ने चबाता है। शेटू का पति बेचारा भय से कांपने लगा। खाने के बाद वह बोला, "अरे, मुझे तो आदमी की गंध आ रही है।"

उसकी पत्नी ने उत्तर दिया, "यहां मेरे अलावा कोई आदमी कहां से आ सकता है?"

वह यह सुनकर बाहर जंगल में चला गया, "अगर घर में नहीं है तो बाहर कहीं होगा। मुझे आदमी की गंध आ रही है और उसे मैं फौरन खाना चाहता हूं।" वह गरजता जाता था और हर जगह उस आदमी को ढूंढ़ रहा था।

उसकी पत्नी ने आदमी के पास जाकर कहा, "अब तो भरोसा हुआ?"

"भरोसा क्या, मैं तो अधमरा हो गया। अब मुझे यहां से भाग जाने की तरकीब बताओ," वह कांपता हुआ बोला।

"तुम चुपचाप छिपे रहो। थोड़ी देर में वह सोने के लिए लौटेगा। वह जैसे ही आंखें बन्द करेगा, मैं एक लालटेन दरवाज़े पर रख दूंगी। उसे देखकर तुम चुपचाप भाग जाना, नहीं तो जान की खैर नहीं है।" उसने समझाया।

थोड़ी देर बाद वह दैत्याकार आदमी फिर लौट आया। फिर आंधी चलने लगी और वह गरजने लगा, "मुझे आदमी की गंध आ रही है।"

जैसे-तैसे उसकी पत्नी ने उसे समझाया। थोड़ी देर बाद उस आदमी को दरवाज़े पर लालटेन दिखाई दी। उसे देखते ही वह सिर पर पैर रखकर भाग खड़ा हुआ। कुछ दूर गया होगा कि उसे लगा वह अतिमानव उसका पीछा कर रहा है। आगे से उसे एक आवाज़ सुनाई दी, "क्यों भाग रहा है? तू कौन है और डरता क्यों है?"

उसने उत्तर दिया, "एक अतिमानव मेरा पीछा कर रहा है। क्या तुम मेरी रक्षा कर सकते हो?"

आवाज़ ने उत्तर दिया, "यहां तो कई अतिमानव रहते हैं। अच्छा, तू

रुक, देखें वह कौन है ?"

वह पेड़ के नीचे रुक गया। तभी ज़ोर से आंधी चलने लगी और पेड़ उखड़कर गिरने लगे। आदमी बोला, "वह आ रहा है। यह आंधी उसकी सांसों की हवा से चल रही है।"

आवाज़ फिर आई, "यदि यह वह आदमी है तब मैं तेरी रक्षा नहीं कर सकता। कुशल इसी में है कि तुम भागते बनो।" आदमी फिर भागने लगा।

थोड़ी दूरी पर एक और आवाज़ ने उसे रोका। उसने सहायता करने को कहा और आंधी देखकर उसने भी कह दिया कि तुम भागते ही जाओ। इस तरह उसे कई अतिमानव रास्ते में मिले और कोई भी उसकी मदद नहीं कर सका।

बहुत आगे जाने पर उसे एक गरजती आवाज़ सुनाई दी, "क्या बात है, क्यों भाग रहा है, कौन तेरा पीछा कर रहा है ?"

उस आदमी ने सारा किस्सा सुनाया और मदद करने के लिए प्रार्थना की। आवाज ने फिर कहा, "डरने की कोई बात नहीं। वह अगर अतिमानव है तो मैं अतिदानव हूं।" फिर आंधी चली और आदमी ने कहा, "वह आया।"

अतिदानव बगैर भय के वहीं खड़ा रहा। अतिमानव चिंघाड़ता हुआ आया औरबोला, "वह आदमी मुझे दे दो। मैं उसे खा जाना चाहता हूं।"

अतिदानव ने कहा, "तो आ मेरे पास।" अतिमानव और अतिदानव दोनों एक-दूसरे से गुंथ गए और भयानक लड़ाई होने लगी।

बेचारा आदमी पीछे खड़ा देख रहा था। उसने सोचा कि ये दोनों जब तक लड़ रहे हैं तब तक भाग जाने में ही कुशल है, क्योंकि अतिमानव के चंगुल से अगर बच भी गया तो अतिदानव उसे वापस नहीं जाने देगा। वह चुपचाप जंगल के रास्ते भागने लगा।

भागते-भागते वह घर पहुंचा। उसकी पत्नी ने कहा, "अब तो सीख मिली। तुम चाहे भीम जैसे बलवान हो लेकिन डींग हांकने में कुछ नहीं रखा है। अच्छे-भले मानव बने रहो, वही अच्छा है।"

मानव तो समझकर अपने ढंग से रहने लगा लेकिन कहा जाता है कि अतिमानव और अतिदानव अब भी ऊपर आकाश में लड़ रहे हैं। उनके गरजने की आवाज़ बरसात के दिनों में अक्सर सुनाई देती है।

पशु-पक्षियों की भाषा

अफ्रीका में बरसों पहले एक बदनसीब आदमी रहता था। नाम था उसका ओहिया। वह बीज बोता तो फसल नहीं उगती, फसल उगती तो उसमें दाना नहीं पड़ता, दाना पड़ता तो उसे जानवर खा जाते। ओहिया की पत्नी का नाम था अरीवेह्। भाग्य उसका भी साथ नहीं दे रहा था।

जब दोनों भूखों मरने लगे तो अरीवेह् ने सुझाव दिया, "तुम नदी पार जागीरदार के पास जाओ और कहो कि वह तुम्हें ताड़ के पेड़ काटने की आज्ञा दे दे। वह भला आदमी है और तुम्हारी अवश्य सहायता करेगा। उन पेड़ों का रस निकालकर हम उसकी शराब बेचेंगे। यह बड़े लाभ का काम है।"

ओहिया को खेती में कभी सफलता नहीं मिली, सो वह यह काम करने को तैयार हो गया। जागीरदार के पास जाकर उसने अपनी इच्छा बताई। वह इस शर्त पर तैयार हो गया कि जो रुपया वह कमाएगा उसका आधा जागीरदार को दे देगा।

ओहिया ने बड़ी मेहनत की। दिन में वह ताड़ के पेड़ में चीरा लगाकर छोटे-छोटे घड़े बांध देता था कि सवेरे तक उनमें रस भर जाए। पहली सुबह ही उसने देखा कि सभी पेड़ों पर लटके घड़े फूटे हैं। वह सोचता रहा कि आखिर ये फूट कैसे गए। उसने इसे भी नसीब का खेल ही समझा। दूसरे दिन उसने फिर घड़े बांधे। सवेरे फिर, सब घड़े फूटे हुए थे। उसने अन्दाज़ लगाया कि जो रस इकट्ठा हुआ होगा, वह नीचे गिर गया होगा। लेकिन अरीवेह् ने कहा, "हो न हो, यह कोई चोर है। कोई भी फिजूल ही ये घड़े नहीं तोड़ेगा। और अगर ये फूटे हैं तो फिर रस कहां गिरा?"

ओहिया ने सोचा कि वह रात भर पहरा देगा और देखेगा कि चोर

कौन है । वह रात को घड़े बांधने के बाद एक झाड़ी में छिपकर बैठ गया। रात बीतती गई लेकिन कोई आया नहीं । जब दो बज गए तो उसने एक परछाईं देखी । पास से देखने पर पता चला कि वह तो एक हिरण है । हिरण के पास एक बड़ा-सा घड़ा था । उसने पेड़ पर चढ़कर ओहिया के घड़े का रस अपने घड़े में उड़ेल लिया और ताड़ पर लटके घड़े फोड़ दिए ।

ओहिया ने हिरण को पकड़ने की कोशिश की । वह तेज़ी से दौड़ा, पर हिरण को पकड़ नहीं पाया । लेकिन वह उसका पीछा करता ही रहा ।

चलते-चलते पहाड़ की एक चोटी पर चढ़ गया । वहां से उसने देखा कि उसकी तलहटी में कई पशु बैठे हैं । वह भी वहां पहुंच गया । चीता उनका राजा था । हिरण दौड़ता हुआ उस चीते के चरणों में गिर गया ।

उसी समय पशुओं ने देखा कि एक आदमी उनके बीच खड़ा है । ओहिया ने कहा, "यह हिरण चोर है और मुझ बदनसीब आदमी की चीज़ें चुरा रहा है ।" ओहिया ने उनको अपनी सारी कहानी कह सुनाई ।

चीता बोला, "यह तो वाकई हिरण की गलती है । मैंने इसे ताड़ से बनी शराब खरीदने भेजा था । इसने रुपये अपने पास रख लिए और तुम्हारे घड़े से रस चुराकर ले आया··· । खैर, अबजो हुआ सो हुआ, लेकिन तुम्हें हम यह शक्ति देते हैं कि तुम पशु-पक्षियों की भाषा समझ सकोगे और इससे तुम्हें लाभ भी होगा । शर्त केवल यही है कि तुम यह घटना किसीको नहीं कहोगे और यह नहीं बताओगे कि तुम पशु-पक्षियों की भाषा समझ सकते हो । यदि ऐसा करोगे तो उसी समय तुम्हारी मृत्यु हो जाएगी ।"

ओहिया लौट आया । दिन बीतते गए । एक दिन वह नदी में नहा रहा था । उसी समय किनारे पर खड़ी एक मुर्गी अपने बच्चों से कह रही थी, "देखो बच्चो, इस मूर्ख आदमी की तरफ । यह नहा रहा है, लेकिन इसे नहीं मालूम कि इसके घर के पीछे हीरे-जवाहरात से भरे तीन मटके गड़े हुए हैं ।"

ओहिया घर आया और रात को उसने मुर्गी की बताई जगह गड्ढा खोदा । उसे बहुत आश्चर्य हुआ कि मुर्गी की बात सच निकली । उसने वह रुपया-पैसा घर में ले जाकर छिपा दिया । अरीवेहू को यह नहीं बतलाया कि वह मुर्गी की भाषा जानता है ।

वे सम्पन्न हो गए । खूब अच्छा घर । खूब सारे नौकर-चाकर । ऐश और

आराम की कमी नहीं। ओहिया ने एक शादी और कर ली। वह स्त्री दिखने में अच्छी थी, और उसके रूप को देखकर ही ओहिया अंधा हो गया था, लेकिन थी वह स्त्री बुरे स्वभाव की।

एक दिन की बात है। वे दोनों बैठे हुए थे कि अरीवेहू भी वहीं आकर बैठ गई। बहुत देर तक वहां बैठे रहने से सब ऊंघने लगे। ओहिया छत की तरफ देखता अपने विचारों में खोया हुआ था। तभी दो चूहे उधर से गुज़रे। उनमें से एक बोला, "ये मूर्ख लोग सो जाएं तो आज इनके रसोईघर में घुसकर खूब दावत उड़ाई जाए। आज तो वहां बढ़िया फलियां रखी हुई हैं।"

चूहे की बात सुनकर ओहिया को हंसी आ गई। उसी समय अरीवेहू की आंख भी खुल गई और वह भी वैसे ही हंस दी। दूसरी पत्नी यह समझी कि ये दोनों उसका मज़ाक उड़ा रहे हैं। उसने पूछा, "क्या बात हुई, तुम क्यों हंसे?"

ओहिया ने कहा कि बैठे-बैठे उसे ऐसे ही एक खयाल आ गया था और इसके कारण उसे हंसी आ गई थी। यह सुनकर उसने पूछा, "तो वह बात या वह खयाल बताओ जिससे तुम्हें हंसी आई है।"

ओहिया ने बहुत समझाने की कोशिश की लेकिन वह अपनी ज़िद पर अड़ी रही। जब ओहिया ने कुछ भी बतलाने से इन्कार कर दिया तो उसने राजा से शिकायत कर दी। राजा ने ओहिया को आज्ञा दी कि वह सही बात बतलाए नहीं तो उसे सज़ा दी जाएगी।

हारकर ओहिया ने एक दावत दी जिसके बाद असली बात बतला देगा। जब दावत में सब लोग खा-पी चुके तो ओहिया ने सारी कहानी सुना दी। जैसे ही उसकी बात पूरी हुई, ओहिया ज़मीन पर गिर पड़ा और वहीं उसकी मृत्यु हो गई। जहां दावत हो रही थी वहां मातम छा गया। लोग उसकी कुलटा पत्नी से बेहद नाराज़ हुए और उन्होंने उसे गुस्से में आकर मार डाला। यही नहीं, उन्होंने उसकी लाश को गांव के बाहर ले जाकर जलाया। जहां-जहां वह राख उड़कर गई, लोगों में घृणा, जलन, डाह, फूट फैलने लगी। कहते हैं, इससे पहले संसार में ये सब बुरी बातें नहीं थीं।

चालाक मकड़ा

एक मकड़ा दु:ख के दिन बिता रहा था। उसने तरकीब सोची कि वह कैसे धनवान बन सकता है !

वह पहुंचा एक जंगली बिल्ली के पास। बोला, "बिल्ली मौसी ! मैं बड़ी तंगी में हूं, मुझे आप दस हज़ार कौड़ियां उधार दे दीजिए। मैं मंगलवार को ठीक दस बजे अपने घर में आपका रुपया वापस कर दूंगा।"

बिल्ली ने कहा, "अगर तुम वाकई मंगलवार को रुपया लौटा दोगे और वह भी ठीक दस बजे, तो रुपया ले जाओ।"

मकड़े ने रुपया ले लिया। उसे उसने अपने घर में गाड़ दिया, और चला कुत्ते के पास। बोला, "कुत्ते मामा ! हाथ तंग है, आप अगर मुझे दस हज़ार कौड़ियां उधार दे दें तो मैं मंगलवार को ठीक दस बजकर पांच मिनट पर अपने घर में उसे आपको लौटा दूंगा।"

कुत्ते ने भी रुपया दे दिया। उस रुपये को भी उसने गाड़ दिया, और पहुंचा लकड़बग्घे के पास। बोला, "बड़े भाई, मैं संकट में हूं। अगर आप मुझे दस हज़ार कौड़ियां उधार दे दें तो मैं वे मंगलवार को ठीक दस बजकर पन्द्रह मिनट पर अपने घर में आपको लौटा दूंगा।"

लकड़बग्घे ने भी रुपया दे दिया। उसे भी मकड़े ने गाड़ दिया, और इसी तरह वह चीते से भी दस हज़ार कौड़ियां उधार ले आया। उसे उसने दस बीस पर आने को कहा। शेर के पास भी वह गया और उसे उसने दस पच्चीस पर आने को कहा।

सारा रुपया उसने अलग-अलग गाड़ दिया और इंतज़ार करने लगा कि मंगलवार का दिन आए।

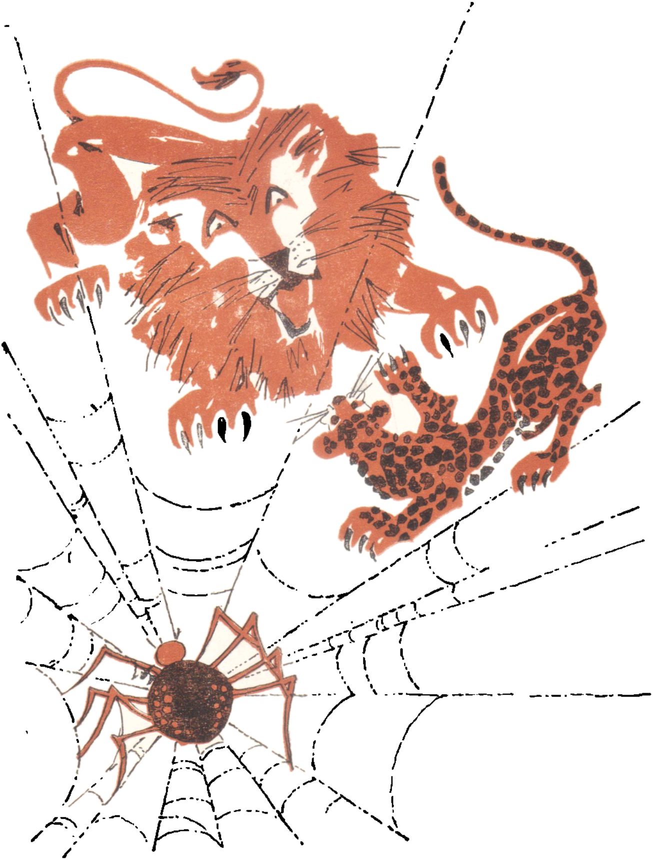

मंगलवार को ठीक दस वजे बिल्ली मौसी आ पहुंची। मकड़ा इधर-उधर की बातें करता रहा। उसने पांच मिनट निकाल दिए। जैसे ही बिल्ली ने कहा कि मेरे रुपये दे, दरवाज़े पर दस्तक हुई। मकड़े ने कहा, "अरे, कुत्ता आ गया। आप इस बाल्टी के नीचे छिप जाइए, नहीं तो वह आप को खा जाएगा।"

बिल्ली छिप गई। कुत्ता आया। उससे भी उसने मीठी-मीठी बातें कीं। जब उसने उधार का रुपया मांगा तो वह बोला, "मेरे पास रुपया तो है नहीं लेकिन इस बाल्टी के नीचे एक बिल्ली है। रुपये के बदले में आप बिल्ली को ले लें। कुत्ता खुश होकर बिल्ली पर झपटा और उसे साफ कर गया।

उसी समय दस्तक हुई और लकड़बग्घा आ धमका। कुत्ते को भी मकड़े ने बाल्टी के नीचे छिपा दिया। लकड़बग्घे से मीठी-मीठी बातें करने के बाद उसने कहा, "भैया, पैसा तो है नहीं, चाहो तो इस कुत्ते को ले लो।"

लकड़बग्घा भूखा था। वह कुत्ते को मारकर खा ही रहा था कि चीता आ गया। मकड़े ने लकड़बग्घे को फौरन बाल्टी के नीचे छिपा दिया।

चीते ने भी जब रुपया मांगा तो मकड़े ने यही कहा, "मेरे पास यह लकड़बग्घा है, इसे ले लीजिए आप।"

चीते को तो आहार चाहिए ही था। उसने उसे मार डाला और खाने लगा। वह उसे खा ही रहा था कि शेर आ धमका। मकड़ा अब डर गया क्योंकि चीते को वह बाल्टी के नीचे छिपने को नहीं कह सकता था और चीता शेर से डरता भी नहीं था। वह चुप रहा।

जब शेर ने फिर पुकारा तो चीता बोला, "अभी बाहर ही रहो, मैं खाना खा रहा हूं।" शेर इससे नाराज़ हो गया। बोला, "खाना है तो मुझे भी दो।" चीते ने मना किया तो शेर दरवाज़ा तोड़कर अन्दर आ गया और चीते से लड़ने लगा। एक-दूसरे पर वे पैंतरे बदल-बदलकर झपटने लगे।

मकड़ा चुपचाप बाहर निकल आया। उसने मौका देखकर कमरे में तेल बिखेर दिया और आग लगा दी। लड़ते-लड़ते वे दोनों आग में जा गिरे और थोड़ी देर बाद झुलस कर मर गए।

चालाक मकड़ा सबका रुपया लेकर धनवान हो गया और सुख से ज़िन्दगी बिताने लगा।

कद्दूराम

एक शाम की बात है। एक अफ्रीकी मां अपनी छोटी-सी बच्ची का हाथ पकड़े दिन-भर का काम पूरा करके घर लौट रही थी। लड़की का नाम था फ़ूराइरा। रास्ते में एक लम्बी बेल पड़ी हुई थी और उसमें एक बहुत बड़ा कद्दू लगा हुआ था।

लड़की उसे देखकर मचल गई, "मां-मां, मुझे यह कद्दू चाहिए।"

मां ने उसे समझाने की कोशिश की कि वह जंगली कद्दू है और हमारे किसी काम नहीं आएगा, लेकिन लड़की ज़िद पर उतर आई। वह रास्ते-भर चीखती जा रही थी कि उसे वह कद्दू ही चाहिए। मां ने साफ मना कर दिया, लेकिन पिता नरम दिल के थे। वे चाकू लेकर अपनी बेटी के साथ उस बेल के पास पहुंचे। पिता ने उसे काटा और फ़ूराइरा उसे उठाने वाली ही थी कि वह अपने-आप फ़ूराइरा के आगे-आगे लुढ़ककर चलने लगा।

पिता को बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्हें लगा कि उस कद्दू में जान है।

कद्दू का चलना सुनकर गांववालों की भीड़ इकट्ठी हो गई। सभी लोगों को आश्चर्य हो रहा था।

तभी कद्दूराम बोलने भी लगे, "फ़ूराइरा, मैं मांस खाऊंगा।" यह कहकर वह लड़की पर झपटा। वह डरकर अन्दर भाग गई।

पिता ने समझ लिया कि यह तो कोई दैत्य है। वह बोले, "फ़ूराइरा, तुम भेड़ के बाड़े की तरफ दौड़कर जाओ, उससे कद्दू भी वहां चला जाएगा।"

लड़की बाड़े की तरफ दौड़ी गई। कद्दू भी वहां जा पहुंचा। कद्दूराम उस बाड़े में से एक पूरी भेड़ निगल लिया। फ़ूराइरा उसे भेड़ को निगलता देखकर घर लौट आई लेकिन कद्दूराम भी लुढ़कता हुआ फिर उसके पास आ

गया वह फिर कहने लगा, "फ़राइरा, मैं और गोश्त खाऊंगा।"

पिता ने कहा, "फ़राइरा, दौड़कर जानवरों के बाड़े में चली जाओ।"

लड़की दौड़कर वहां भी गई और उसने देखा कि कद्दू उसके पीछे-पीछे दौड़ता चला आया और पूरी एक गाय को निगल गया। कद्दू पहले जितना बड़ा था, अब उससे कई गुना बड़ा हो गया।

फ़राइरा जैसे ही दौड़कर फिर घर में आई कि कद्दू ने फिर कहा, "मुझे और खाने को दो।"

अब गांव के लोग परेशान हो गए। पिता ने कहा, "वह सामने से ऊंट गुजर रहा है, तुम उसके पास चली जाओ।"

फ़राइरा ऊंट के पास चली गई। लोग आश्चर्यचकित रह गए कि वह ऊंट को भी निगल गया।

फ़राइरा दौड़कर फिर पिता के पास आ गई। कद्दू भी उसके पास आ गया और बोला, "मैं और खाऊंगा।"

फ़राइरा ने कहा, "अब खाने को कुछ भी नहीं बचा है।"

वह बोला, "तो मैं अब तुमको खाऊंगा।"

सब लोग डर गए। पिता ने गुस्से में आकर कद्दू को एक लात जमाई। लात खाकर वह बहुत पीछे हट गया और बाड़े में खड़े बकरे से जा टकराया जो बहुत शैतान था।

बकरे ने उसे सींगों पर उठा लिया और उछाल दिया। वह बहुत ऊपर उछलकर नीचे आ गिरा। वह गिरा तो ऐसा लगा जैसे बम ही फूटा हो।

उसका पेट फट गया और उसमें से भेड़ और गाय और ऊंट सही-सलामत बाहर आ गए। कद्दू ऐसा लग रहा था जैसे गुब्बारे में से हवा निकल गई हो।

लोगों ने उसे पकड़कर जला दिया। जो कद्दू सबको खा जाना चाहता था, वह बात की बात में राख हो गया।

उवुंगलमा

अफ्रीका में एक बार भयानक अकाल पड़ा। सब भूखों मरने लगे। जंगल के सारे जानवर सूखकर कांटा हो गए।

जंगल में एक कल्पवृक्ष था। कहते हैं उससे जो मांगो सो मिल जाता था। लेकिन उसे उसका असली नाम बतलाना पड़ता था। सारे जानवरों में से कोई भी उसका असली नाम नहीं जानता था। तभी एक जानवर ने कहा, "मेरे दादाजी कहा करते थे कि पर्वतराज को उसका असली नाम मालूम है।"

"तो कोई पहाड़ की सबसे ऊंची चोटी पर जाए और उसका असली नाम मालूम करके आए, नहीं तो हम मर जाएंगे।"

खरगोश सबसे तेज़ चाल वाला माना जाता था, सो उसे यह काम दिया गया। चलते-चलते वह पर्वतराज के पास पहुंचा और बोला, "हम भूखों मर रहे हैं। आप हमें कल्पवृक्ष का असली नाम बतला दीजिए।"

पर्वतराज ने बतला दिया, "उ-वुं-ग-ल-मा।"

खरगोश ने दो-तीन बार नाम दुहराया और दौड़ लगाई कि लौटकर सबको असली नाम बतला दे। लेकिन वह कुछ ही आगे आया था कि चींटियों की एक बाम्बी से टकरा गया। उस टकराहट से वह लोट-पोट हो गया लेकिन संभलकर फिर दौड़ने लगा और अपने दोस्तों के पास आ गया। सब बेसब्री से उसका इन्तजार कर रहे थे।

"बोलो भाई, क्या नाम है?" किसीने पूछा।

खरगोश ने दम लेकर कहा, "उ वुंग···उवुंगउवुं उवुं···" लाख कोशिश करने पर भी खरगोश पूरा नाम याद नहीं कर सका। वह भूल गया था।

सब लोग खरगोश पर बहुत नाराज़ हुए। अब एक भैंसे ने जाने की

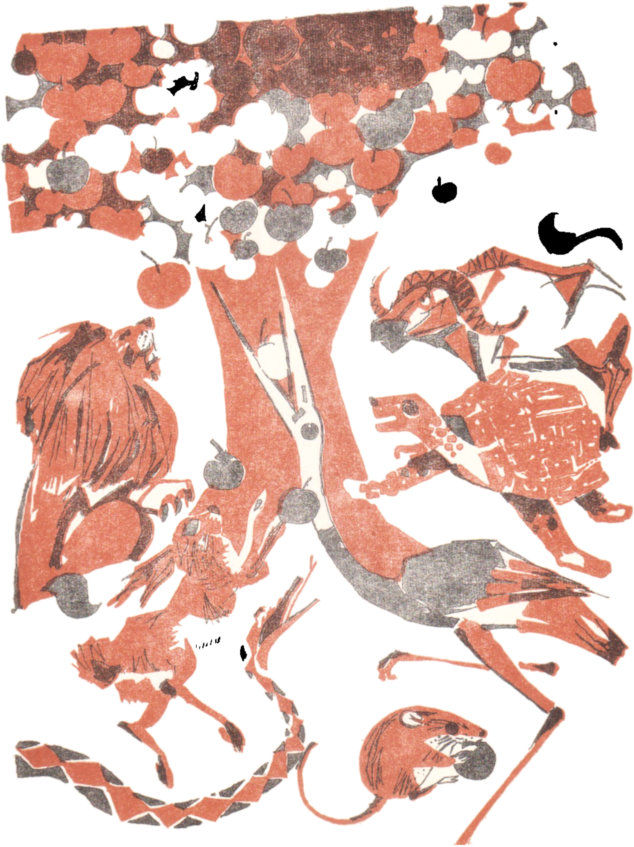

तैयारी की। जंगली भैंसा चला और चलते-चलते पर्वतराज के पास जा पहुंचा। उसने कहा, "खरगोश तो कल्पवृक्ष का नाम भूल गया। अब आप फिर से वही नाम बतला दीजिए कि हमारी जान बचे।" पर्वतराज ने उसे फिर बतला दिया, "उ-वुं-ग-ल-मा।"

भैंसाराम खुश होकर पूछ हिलाते हुए लौटने लगा। जब पहाड़ उतर चुका तो उसने दौड़ लगाई। सहसा वह चींटियों के शिखर से जा टकराया और तीन कुलाटियां खा गया। किसी तरह वह उठा और फिर चलने लगा।

सारे जानवर उसका इंतज़ार कर रहे थे। पूछा उन्होंने, "नाम बताओ भई, हम तो खाने के लिए मरे जा रहे हैं।

भैंसे को विश्वास था कि वह नाम नहीं भूल सकता। वह बोला सुनो, उ वुं ग उवुंग...उवुंग उवुंग...। भैंसे को पसीना आ गया। वह रास्ते में गिरने के कारण बाकी का नाम भूल गया था।

"हमें मालूम था कि तुम किसी बात को याद नहीं रख सकते।"

अब जानवरों ने फिर सभा की और जंगल के राजा शेर को यह काम सौंपा। शेर अपने राजसी ठाठ से चला। पतर्वराज के पास जाकर उसने कहा, "खरगोश और भैंसा तो नाम भूल गए हैं इसलिए मुझ आना पड़ा।"

पर्वतराज ने फिर वही नाम बतला दिया। शेर दौड़ते हुए चला और जब करीब-करीब पहाड़ उतर चुका था, उसी समय वह भी चींटियों की पहाड़ी से टकरा गया। उसने धूल झाड़ी और फिर दौड़ने लगा, लेकिन दुर्भाग्य, जब सबने नाम पूछा तो वह केवल उ वुं ग ही बोल पाया। जंगल का राजा भी नाम भूल गया।

फिर सभा हुई और कुछ भी तय नहीं हो पाया। तभी एक कछुआ सामने आया और बोला, "कल मैं जाऊंगा और नाम पूछकर आऊंगा।"

सारे जानवर हंसने लगे। जहां शेर हार गया वहां कोई और क्या कर सकता है। लेकिन कछुए ने इतना ही कहा, "कल शाम तक इंतज़ार करो और उसके बाद मेरा मज़ाक उड़ाना।"

खैर, सबने कछुए को जाने की आज्ञा दे दी।

सुबह-सुबह निकला और चलने लगा। चलते-चलते वह पर्वतराज के पास जा पहुंचा। उसने कल्पवृक्ष का असली नाम पूछा। पर्वतराज ने कहा,

"अब तुम ध्यान से सुन लो। मैं इसके बाद किसी को नाम नहीं बतलाऊंगा। नाम है उवुंगलमा।"

कछुए ने पहले कदम पर ही नाम बोला, "उवुंगलमा।" कुछ दूर जाकर वह फिर बोला, "उवुंगलमा।" उतरते समय जब उसका पैर फिसला तो वह बोला, "उवुंगलमा।" फिर खुश होकर बोलता, "उवुंगलमा।" रास्ते में फिर जब चींटियों का शिखर दिखाई दिया तो वह बोला, "उवुंगलमा।" और रात से पहले वह जानवरों के पास जा पहुंचा।

सबने पूछा, "नाम बताओ।"

वह चुपचाप पहले कल्पवृक्ष के सामने गया और साफ-साफ शब्दों में बोला, "उवुंगलमा।"

बात की बात में पेड़ से फलों की वर्षा होने लगी। सारे जानवर खुश हो गए। सबने फल खाए और कछुए को धन्यवाद देने लगे।

रोज़ सुबह कछुआ कल्पवृक्ष को उसका असली नाम बतलाता और फलों की वर्षा होने लगती। अकाल के दिनों में सबकी जान बच गई।

फिर बरसात हुई और जंगल हरा-भरा हो गया। जानवरों ने कछुए को शेर की जगह अपना राजा बना दिया और उस दिन से कछुए की धीमी चाल की किसीने हंसी नहीं उड़ाई।

आकाश-नसैनी

बरसों पहले की बात है। एक जंगल में बहुत सारे जानवर अकेले रहते थे। वे चाहते थे कि उनके विवाह हो जाएं तो उनकी पत्नियां खाने-पीने का इन्तज़ाम ठीक से रखा करेंगी। लेकिन उन्हें विवाह करने के लिए लड़कियां नहीं मिल रही थीं। जब सब परेशान थे तब एक खरगोश ने कहा, "मैंने सुना है, ऊपर आकाश में बादलों से ऊपर बहुत-सी लड़कियां हैं।"

"लेकिन वहां जाएं कैसे ?" एक ने पूछा।

"मैं एक जाले के रूप में नसैनी बनाकर आकाश तक लगा दूंगा और तब सब वहां जा सकेंगे।" एक मकड़े ने कहा।

सबको सुझाव पसंद आया। बात की बात में मकड़े ने अपने जाले तान लिए और आकाश तक नसैनी लगा दी। खरगोश ने आगे बढ़कर कहा कि अब हम ऊपर जा सकते हैं।

सारे जानवर चढ़ने लगे—भैंसे, हाथी, शेर, चीते, हिरण··· । जाले की नसैनी कांपने लगी, लेकिन मकड़े ने उसे इस तरह बुना था कि वह टूट नहीं सकती थी।

वहां सभी को पत्नियां मिल गईं। नियमानुसार सबने बात तय करके शादियां कर लीं और अपनी ससुराल में सब आराम करने लगे।

लेकिन खरगोश ने बात पूरी तरह तय नहीं की। अपनी पत्नी को ढूंढ़ लेने के बाद अपनी सास से कुछ कहकर वह उसके घर में घुस गया कि खाने को कुछ तो मिल जाए। अन्दर जाकर उसने देखा कि मटर के बढ़िया दाने रखे हैं। खरगोश को काफी भूख लगी थी। उसने पेट भरकर खाया फिर और सोचने लगा कि यदि सास को यह मालूम हो गया तो क्या होगा। तरकीब

सोचकर उसने कुछ दाने हाथ में रख लिए और वहां आया जहां सब लोग जमा थे। और किसीसे तो वह बात नहीं कर पाया लेकिन मकड़े के पास जाकर उसने देखा कि वह थककर सो रहा है। खरगोश ने "कहो यार मकड़े, क्या हो रहा है ?" कहकर उसके झोले में कुछ दाने डाल दिए और दूसरे दोस्तों के पास आकर गप्पें मारने लगा।

थोड़ी देर में उसकी सास को पता चल गया। वह शोर मचाती हुई सबके पास आई कि मेरे मटर के दाने किसने चुराए हैं। सबने मना कर दिया कि किसीको नहीं मालूम।

तब खरगोश बोला, "चोर को ढूंढ़ने का सही तरीका यह है कि सबकी तलाशी ली जाए। जिसने भी दाने चुराए होंगे या खाए होंगे, तलाशी से उसका पता चल ही जाएगा।"

सब इस बात से सहमत हो गए क्योंकि किसीने भी चोरी नहीं की थी। तलाशी लेते-लेते मकड़े के जाले में फंसा हुआ एक दाना दीख गया। खुद खरगोश ने ही आगे बढ़कर कहा, "लो, चोर तो यहां बैठा है। इसने सोचा होगा कि मुझे कौन पकड़ेगा।"

मकड़े ने खीजकर कहा, "मुझे इन दानों से क्या करना, ये मेरे क्या काम आएंगे।" लेकिन खरगोश की भावी सास उसपर बरस पड़ी और बुरा-भला कहने लगी। सब लोग भी कहने लगे कि मकड़े ने यह अच्छा काम नहीं किया है। उसे ससुराल में तो चोरी नहीं करनी चाहिए थी। मकड़े ने कसम खाकर कहा कि मैंने यह काम नहीं किया है, लेकिन किसीने उसकी नहीं सुनी।

तब मकड़ा बोला, "मैं जाले की नसैनी बनाकर तुम्हें ऊपर लाया हूं और उसका ही यह बदला दे रहे हो तुम। अब मैं अपनी नसैनी उतार रहा हूं।" यह कहते हुए मकड़ा उस नसैनी की घड़ी करता हुआ नीचे जाने लगा।

अब सब लोग बहुत घबराए कि वे अब नीचे कैसे जाएंगे। वे मकड़े से प्रार्थना करने लगे कि उन्हें क्षमा कर दे। लेकिन मकड़ा धुन का पक्का था। वह फुर्ती से धरती पर उतर आया।

"अब किया क्या जाए ?' सारे जानवर परेशान हो गए।

बन्दर ने कहा कि मैं तो नीचे कूद रहा हूं। यह कहकर उसने छलांग लगाई और पत्थर की तरह नीचे जा गिरा। गिरते ही वह खत्म हो

गया। दूसरे जानवर भी एक-एक कर कूदने लगे और वैसे ही उनका भी अन्त होने लगा।

तभी खरगोश को अपनी चिन्ता हुए। वह हाथी से बोला, "भैया, तुम सबके बाद में कूदना, नहीं तो दूसरे जानवरों का कचूमर ही बन जाएगा।"

हाथी रुक गया। जब सब कूद चुके तो हाथी भी कूदने को तैयार हो गया। जब हाथी कूदने ही वाला था तो खरगोश आगे बढ़ आया और उसके कूदते ही उसके ऊपर जम कर बैठ गया। हाथी इतना बड़ा था कि वह तो ज़मीन पर ऐसे गिरा जैसे बम ही फट गया हो और वह तुरन्त ही मर भी गया। लेकिन खरगोश का बाल बांका नहीं हुआ, क्योंकि वह हाथी की पीठ पर सवार था।

उस दिन के बाद से कोई भी बादलों के ऊपर आकाश में नहीं गया। जो यह कहानी सुन लेते हैं वे मकड़े को आकाश की तरफ जाला बुनते देखकर भी ऊपर नहीं जाना चाहते।

जलता जूजू : उड़ता बाज़

बरसों पहले की बात है। एक औरत के तीन बेटे थे। तीनों बच्चे होनहार और मां के आज्ञापालक। जब मां के मरने का समय आया तो उसने तीनों से पूछा कि तुम मेरा क्रियाकर्म किस प्रकार करोगे।

पहले ने कहा, "तुम्हारे मरने पर मैं एक बहुत बढ़िया मकबरा बनवाऊंगा और उसके अन्दर तुम्हारी कब्र बनाई जाएगी।"

दूसरे ने कहा, "मैं तुम्हारी अर्थी की पेटी बढ़िया लकड़ी की बनवाऊंगा।"

तीसरा बोला, "मैंने सुना है मां, कि अर्थी के साथ राजकुमारी हथिनी की पूंछ के बाल रखने से आदमी स्वर्ग चला जाता है। यह अब तक कोई भी नहीं कर पाया है, लेकिन मैं ज़रूर करूंगा।"

मां को बेटों के इस प्यार से बहुत सन्तोष मिला, और एक दिन वह चल बसी। अब बेटों ने अपना-अपना वादा पूरा करना शुरू किया। पहला मकबरा बनवाने लगा, दूसरा बढ़िया लकड़ी ढूंढ़ने गया। तीसरा चला हथिनी को ढूंढ़ने।

तीसरे का काम सबसे मुश्किल था। उसका नाम था क्वेसी। क्वेसी ने अपना धनुष-बाण हाथ में लिया और चला। उसके पास एक मन्त्र भी था जो लकड़ी के एक टुकड़े पर खुदा हुआ था। इसे वह अपने बालों में खोंसे रखता था। इसका नाम था जूजू। जूजू से वह जो भी सहायता मांगता वह उसे मिल जाती थी।

कई सप्ताह तक लगातार चलने के बाद वह एक एकान्त जगह पर पहुंचा। उस जगह एक झोंपड़ी थी। क्वेसी ने दरवाज़ा खटखटाकर पूछा, "यहां कौन रहता है?" आवाज सुनकर एक बुढ़िया बाहर आई। उसने पूछा,

"तुम कौन हो, और यहां क्यों आए हो ? यहां केवल हाथी ही रह सकते हैं। कोई भी मानव यहां नहीं आ सकता।"

"तब तो मैं वाकई उस जगह पहुंच गया जहां मुझे पहुंचना था," क्वेसी ने कहा।

बुढ़िया घबराकर बोली, "हाथी अभी जंगल में गए हैं, लेकिन लौटने पर तुम्हें देखते ही वे मार डालेंगे, जिन्दा नहीं छोड़ेंगे।"

तभी जंगल से हाथियों के लौटने की आवाज़ें आने लगीं। बुढ़िया बोली, "अब तो वे आ गए, क्या किया जाए ! अब तो तुम भाग भी नहीं सकते।" फिर बुढ़िया ने ही कहा, "अच्छा तुम वहां उस अंधेरे में छुप जाओ, नहीं तो मारे जाओगे।" क्वेसी छुप गया।

हाथियों के लौटने से धूल के बादल उड़ने लगे। लौटकर वे जहां-तहां जा बैठे। रात होने पर एक हाथी बोला, "अरे यहां कहीं न कहीं आदमी है। उसकी मुझे गंध आ रही है।"

बुढ़िया ने कहा, "यहां मेरे अलावा कोई आदमी हो ही नहीं सकता।"

उसके समझाने पर वे किसी तरह शांत हो गए। और सो गए। जब रात बहुत गहरी हो गई तो क्वेसी ने चारों तरफ घूम-फिर कर राजकुमारी हथिनी को ढूंढ़ ही लिया। वह दबे पांव उसके पास गया और चुपचाप उसकी पूंछ के बाल काटकर चलता बना। बाहर आते ही उसने भागना शुरू कर दिया।

सुबह होते ही राजकुमारी बोली, "रात को मैंने एक सपना देखा था कि कोई आदमी मेरे बाल काट रहा है। मैं तो उसे सपना समझी थी लेकिन देखो, सचमुच कोई मेरे बाल काटकर ले गया है।"

राजकुमारी को दुःखी देखकर सबने तय किया कि उसका पीछा किया जाना चाहिए। सारे हाथियों ने क्वेसी के पैर के निशान देखकर उनके पीछे भागना शुरू कर दिया। कुछ ही देर में वे क्वेसी के पास पहुंच गए। उसने अपने जूजू से पूछा कि अब मैं क्या करूं। जूजू ने कहा, "एक तिनका उठाकर पीछे फेंक दे।"

तिनका फेंकते ही उस जगह बहुत बड़ा खेत बन गया। हाथी थक गए थे और उन्हें भूख लगी थी, सो ऐसा बढ़िया खेत देखकर वे नाश्ता करने लगे।

लेकिन कुछ ही देर बाद वे फिर पीछा करने लगे।

क्वेसी ने फिर जूजू से पूछा। जूजू ने कहा, "तेरे सामने जो टहनी पड़ी है, उसे पीछे फेंक दे।" टहनी के फेंकते ही पीछे एक बहुत बड़ा पेड़ उग आया। हाथी उसे देखकर रुक गए। टहनियां नरम थीं और पत्ते हरे, सो वे भोजन करने लगे। थोड़ी देर बाद क्वेसी अपने गांव पहुंच गया और उसने मां की अर्थी में राजकुमारी हथिनी की पूंछ के बाल रख दिए।

उधर राजकुमारी ने जब सुना कि वे उस आदमी को नहीं पकड़ पाए तो उसीने जादू से स्त्री-रूप धारण कर लिया और क्वेसी के गांव के पास आ गई। आकर बोली, "जो कोई तीन सौ तीर मेरी टोकरी में मार सकेगा, उससे मैं विवाह कर लूंगी।"

गांव के सारे युवक कोशिश करने लगे लेकिन सब हार गए। तब उनमें से एक बोला, "क्वेसी को बुलाओ। वह तो राजकुमारी हथिनी की दुम काट लाया है, वह जरूर यह काम कर सकेगा।"

हथिनी समझ गई कि वह ठीक जगह आ गई है। क्वेसी आया और उसने राजकुमारी की टोकरी को तीन सौ तीरों से छेद किया।

राजकुमारी ने उससे शादी कर ली। क्वेसी समझ गया कि इसमें कोई न कोई चाल है, सो वह सोते समय भी एक आंख खुली रखता। रात को उसने देखा कि राजकुमारी सहसा हथिनी बन गई है और उसे मार डालने को झपटने ही वाली है। वह बोला, "जूजू, बचाओ।" जूजू ने उसे चटाई बना दिया और हथिनी उसे ढूंढ़ नहीं सकी। दूसरे दिन वे दोनों फिर स्त्री-पुरुष बन गए। क्वेसी ने बताया कि वह डरकर चटाई बन गया। राजकुमारी ने घर की सारी चटाइयां जला डालीं। क्वेसी गलती से कह गया कि उसके बालों में जूजू रखा है जो उसकी रक्षा करता है। राजकुमारी ने क्षमा मांगी कि वह अब कोई ऐसा काम नहीं करेगी।

क्वेसी खेत पर चला गया। दोपहर में राजकुमारी भोजन बनाकर उसके लिए ले गई। क्वेसी ने भोजन किया। राजकुमारी बोली, "अभी तो धूप बहुत है, तुम ज़रा आराम कर लो।"

क्वेसी राजकुमारी के पास सो गया। थोड़ी देर में ही उसने क्वेसी के सिर में से जूजू निकालकर सामने जलती आग में फेंक दिया। राजकुमारी

हथिनी बन गई और क्वेसी को मारने दौड़ी। क्वेसी एकदम जग गया। वह बोला, "बचाओ जूजू।" जूजू आधा जल गया था। जलते-जलते भी वह बोला, "मैं तो जल रहा हूं लेकिन तुम हाथ ऊंचे कर लो और बाज़ की तरह उड़ने की कोशिश करो।"

क्वेसी ने वैसा ही किया। हाथ ऊंचे करने से वह हाथिनी की मार से बच गया और बाज़ बन गया। वह आकाश में चक्कर लगाने लगा। लेकिन जूजू तो जल गया था, अब उसे कौन वापिस आदमी बनाता ?

कहते हैं, जहां आग जल रही हो, बाज़ उसके नज़दीक अवश्य जाता है। यह भी कहते हैं, वह बाज़ अब भी जलते हुए जूजू को ढूंढ़ रहा है कि वह उसे फिर से आदमी बना दे।

खोई हुई अंगूठी

एक राजा के दरबार में दो दरबारी काम करते थे। उनके नाम थे—मावु और फिया। दोनों बड़े चतुर थे। लेकिन राजा फिया को अधिक चाहते थे और मावु को कम। एक बार दोनों को कुछ समय की छुट्टी दी गई। उनके जाते समय राजा ने मावु को बढ़िया शकरकंद दिए और फिया को एक भूरे रंग का पत्थर।

रास्ते में चलते-चलते फिया को बुरा लगने लगा कि राजा ने मावु को खाने की चीज़ दी और मुझे दिया पत्थर। वह मावु से बोला, "यह पत्थर किसी काम का नहीं है। इसे मैं फेंक देना चाहता हूं।"

मावु ने कहा, "इसे फेंको मत। मैं यह शकरकंद का ढेर ढोते-ढोते थक गया हूं। चाहो तो तुम ले लो और बदले में यह पत्थर मुझे दे दो।"

फिया ने पत्थर उसे दे दिया और शकरकंद ले लिया। जब मावु घर गया तो एक दिन उसने उस पत्थर के अन्दर कोई चमकीली चीज देखी। उसे देखकर ही लगा कि इसके अन्दर कुछ है। उसने पत्थर को तोड़ा तो उसके अन्दर से कीमती जेवर निकले। वह बहुत खुश हुआ।

छुट्टी खत्म होने पर जब वे दोनों लौटे तो भोज के समय मावु ने राजा को चौंकाना चाहा। वह पत्थर में से निकले हुए जेवर पहनकर राजा के सामने पहुंचा। उसे देखते ही राजा नाराज़ हो गया। फिया ने जब कहा कि उसने अज्ञानवश पत्थर मावु को दिया था, सो उसे राजा ने क्षमा कर दिया लेकिन मावु से वह नाराज़ हो गया। मावु ने कहा, "मुझे आप क्षमा कर दें क्योंकि मैंने अपने शकरकंद फिया को दे दिए थे, जिन्हें वह खा चुका है।"

राजा ने कहा, "ठीक है। मैं तुम्हें क्षमा करता हूं, लेकिन बदले में यह अंगूठी भी दे रहा हूं। इसे तुम अपने पास रखो और सात दिन के बाद इसे

लाकर मुझे दिखलाना। नहीं तो तुम्हें फांसी दे दी जाएगी।"

माबु ने उस अंगूठी को संभालकर रखा क्योंकि उसे मालूम था कि राजा नाराज़ है। अगर अंगूठी न मिली उसे सात दिन बाद, तो वह सज़ा दिए बिना मानेगा ही नहीं।

अब वह सोचने लगा कि इस अंगूठी को छिपाए तो कहां! रात जब सब लोग सो रहे थे तो उसने चुपचाप दीवार के एक हिस्से को खरोंचा और उसके अन्दर अंगूठी को रखकर उसपर मिट्टी थोप दी। अब उसे विश्वास हो गया कि कोई भी उसे नहीं देख सकेगा।

दो दिन बाद राजा ने अपने एक दूत को माबु की पत्नी के पास भेजा। उसने कहा, "राजा चाहते हैं कि जो नई अंगूठी माबु के पास है, वह अगर ले जाकर तुम उन्हें दोगी तो राजा मुंहमांगा इनाम देंगे। अपने पति को यह बतलाने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि जब वह राजा का दिया इनाम देखेगा तो बेहद खुश होगा।"

अब उस औरत ने घर में खोज शुरू की। जब कहीं भी अंगूठी नहीं मिली तो उसने पति से कहा, "मैंने एक दिन तुम्हारी अंगुली में एक अंगूठी देखी थी, वह कहां गई?" माबु समझा कि इसने उसे देख लिया होगा, सो वैसे ही कह दिया, "मैंने उस दीवार में छिपा दिया है। यह किसीसे कहना मत, क्योंकि उसकी मुझे ज़रूरत पड़ सकती है।"

दूसरे दिन माबु की पत्नी ने सारी दीवार की पड़ताल कर डाली। आखिर एक जगह अंगूठी मिल ही गई। वह राजा को उसे दे आई और बदले में बहुत से जेवर ले आई। उसने उन्हें पीछे के आंगन में इस आशा से गाड़ दिया कि किसी समय पति को चौंकाएगी।

सातवें दिन सवेरे-सवेरे राजा का दूत आ पहुंचा कि उसने अंगूठी मंगवाई है। माबु ने दीवार में सब जगह खोजा लेकिन कहीं भी अंगूठी का पता नहीं चला। वह बहुत परेशान हो गया। उसने पत्नी से पूछा लेकिन सारा मामला समझकर वह डर गई और बोली कि उसे कुछ भी नहीं मालूम।

बेचारा माबु राजा के सामने गया। राजा न कहा, "तुमने मेरी आज्ञा का उल्लंघन किया है और उसकी एक ही सज़ा है, मौत।"

माबु ने कहा, "ठीक है मैं तैयार हूं। लेकिन मुझे एक दिन की मोहलत दे

दीजिए।" राजा न स्वीकृति दे दी।

मावु दुःखी होकर वहां से चला कि कल मर जाना होगा। एक जगह नदी किनारे वह बैठ गया। सहसा उसे खयाल आया कि मरने से पहले मछली की बढ़िया सब्ज़ी तो खा ले। उसने कांटा डाला और वहीं बैठ गया।

बहुत देर बाद उसके कांटे में एक मछली फंसी। मछली को बाहर निकाल कर उसने उसका पेट चीर डाला। आश्चर्य की बात कि मछली के पेट में से वही अंगूठी निकल आई।

अंगूठी को देखकर मावु खुशी से नाचने लगा। वह दौड़ा-दौड़ा राजदरबार में गया और राजा से कहा कि अंगूठी मिल गई है। राजा ने उसे क्षमा कर दिया।

आज तक किसीको नहीं मालूम हो सका कि अंगूठी मछली के पेट में कैसे पहुंची। दुनिया के कई रहस्यों की तरह यह भी एक रहस्य है।

नागराज और दो बहनें

अफ्रीका के एक गांव में दो बहनें थीं। जब वे युवा हो गईं तो पिता को विवाह की चिन्ता हुई। वह लड़के ढूंढ़ने चला। अगले गांव की सरहद पर ही उसे मालूम हुआ कि वहां का सरदार शादी करना चाहता है। पिता के लिए यह शुभ समाचार था। वह घर लौटकर आया और अपनी बेटियों से बोला, "पड़ोसी सरदार शादी करना चाहता है। तुममें से कौन पहले शादी करेगी?" बड़ी लड़की बोली, "मैं इससे बड़ी हूं, इसलिए मेरी शादी ही पहले होनी चाहिए।"

पिता ने कहा, "ठीक है। तो हम तैयारी करते हैं। हम लोग बाजे-गाजे सहित तुम्हें सरदार के पास लेकर जाएंगे। मेरा विश्वास है वह तुमसे शादी कर लेगा।" लेकिन बड़ी लड़की ने कहा, "मैं तो अकेली ही जाऊंगी।"

पिता ने बहुत समझाया कि यह रीति-रिवाज के खिलाफ है। लेकिन वह नहीं मानी और ज़िद पर आ गई कि अकेली ही जाएगी। जब किसी की बात उसने नहीं सुनी तो पिता ने उसे आशीर्वाद देकर अकेले ही जाने दिया।

रास्ते में जंगल पड़ता था और लड़की ने साथ में खाने की चीज़ें भी नहीं ली थीं। उसे इस बात का घमंड था कि वह सरदार से शादी करने जा रही है। एक मील चलने के बाद उसे एक चूहा मिला। वह बोला, "क्या मैं आपको सरदार के गांव का रास्ता बता दूं?"

लड़की ने उसे दुत्कार दिया, "बड़ा आया रास्ता बताने वाला! देखता नहीं, मैं सरदार से विवाह करने जा रही हूं।"

चूहा नाराज़ हो गया, बोला, "जा, तेरा बुरा हो।"

कुछ दूर पर एक मेंढक मिला। वह भी यही बोला कि रास्ता बतला दूं।

बड़ी लड़की ने उसे पैर से अलग कर दिया और आगे चल दी। मेंढक के मुंह से भी यही निकला, "जा, तेरा बुरा हो।"

कुछ आगे मिला एक गड़रिया। वह छोटा-सा लड़का उसके सामने खड़ा हो गया और पूछने लगा कि किसी सहायता की ज़रूरत तो नहीं है। दंभी लड़की ने उसे भी झिड़क दिया, "मुझे तुम जैसे मूर्खों की सहायता नहीं चाहिए।" यह कहकर आगे बढ़ी तो लड़के ने कहा, "जा, तेरा बुरा होगा।"

उसके बाद मिली एक बूढ़ी औरत। उसके शरीर पर झुर्रियां ही झुर्रियां थीं। वह बोली, "मैं तुझे सीख देना चाहती हूं। देख रास्ते में आगे कुछ पेड़ तुझे देखकर हंसेंगे, लेकिन उनपर ध्यान मत देना। दही का सकोरा मिलेगा, लेकिन उसे खाना मत। एक ऐसा आदमी भी दिखाई देगा जिसके एक हाथ में उसका अपना सिर और दूसरे हाथ में सुराही होगी, लेकिन वह पानी पीना मत।..."

"बस चुप कर," लड़की ने कहा, "काफी दिमाग चाट लिया मेरा। जो मुझे करना होगा वही करूंगी। तेरी सलाह की कोई ज़रूरत नहीं है मुझे!" यह कहकर वह तेज़ी से आगे बढ़ गई।

रास्ते में उसे देखकर पेड़ हंसने लगे। बड़ी लड़की ने उन्हें डांटा और जब वे चुप हो गए तो वह उनपर हंसने लगी। आगे दही का सकोरा मिला। उसने आगे बढ़कर उसे खा लिया। कुछ दूर हथेली पर सिर रखे हुए आदमी मिला जिसके दूसरे हाथ में सुराही थी। उसने उससे लेकर पानी पी लिया।

जब वह गांव के नदी किनारे पहुंची तो पानी भरती एक लड़की दिखाई दी। उसने पूछा, "बहन, कहां जा रही हो?"

बड़ी लड़की ने रूखा जवाब दिया, "जा रही हूं सरदार से विवाह करने, तुझे क्या?" वह लड़की सरदार की बहन थी। उसने कहा, "सो तो ठीक है लेकिन इस तरफ से गांव में मत घुसना, इससे दुर्भाग्य मिलता है।"

लेकिन वह दंभी लड़की उसी रास्ते से घुसी। गांव में जाकर एक पेड़ के नीचे बैठ गई। एक औरत ने आकर पूछा, "तुम किसलिए आई हो?" लड़की ने उत्तर दिया, "सरदार से शादी करने।"

"तो फिर उसके लिए खाना पकाकर दिखाओ।" औरत ने कहा।

लड़की को यह बात माननी ही पड़ी। लेकिन उसने कभी भी खाना नहीं पकाया था, सो आधा-अधूरा आटा पीसकर कच्ची-पक्की रोटी सेंककर रख दी। जब सूर्यास्त हो गया तो पांच सिर वाला एक नागराज सामने आया। उसने कहा, "मैं यहां का सरदार हूं। लाओ, तुमने खाना कैसा बनाया है ?"

उसे देखकर पहले तो वह डर गई लेकिन फिर उसने रोटी दे दी। उसे चखकर वह बोला, "यह तो बड़ी खराब है। और जिसे इतना छोटा-सा काम भी न आता हो उससे मैं विवाह नहीं कर सकता। अब मैं तुम्हें मार डालूंगा।" पांच सिर वाले सरदार नागराज ने उस लड़की को पूंछ का एक झपट्टा मारा और वह वहीं ढेर हो गई। उसकी मृत्यु की खबर पाकर पिता बहुत दुखी हुआ। पिता को दुखी देखकर छोटी लड़की ने कहा, "अब मैं जाऊंगी, आप तैयारी कीजिए।"

पिता ने तैयारी की। आगे-आगे बाजे वाले थे और साथ में गांव के लोग चल रहे थे। वे थोड़ी दूर ही पहुंचे होंगे कि एक चूहा इस छोटी लड़की के पास आकर बोला, "क्या मैं तुम्हें रास्ता दिखाने में सहायता करूं ?" लड़की ने उसे धन्यवाद दिया और रास्ते के बारे में जो बातें उसने बतलाईं उन्हें ध्यान से सुना। उससे आगे एक बुढ़िया मिली। उसने कहा, "आगे एक दोराहा आएगा, वहां से तुम बड़े रास्ते को छोड़ देना और छोटे रास्ते पर चलना।" बात सुनकर छोटी लड़की बोली, "आपको बहुत-बहुत धन्यवाद दादी मां, जो आपने यह बात बतलाई।"

कुछ दूर पर उसे एक खरगोश मिला। वह बोला, "मैं एक सलाह देना चाहता हूं कि गांव की सरहद पर तुम्हें एक लड़की मिलेगी, उससे बहुत ही आदरपूर्वक बात करना। फिर गांव में एक औरत कहेगी कि अनाज पीसकर रोटी बनाओ। तुम बहुत अच्छा आटा पीसना और बहुत अच्छी रोटी बनाना। और अन्त में नागराज तुम्हारे सामने आएगा। उसका भयानक रूप देखकर डरना मत, और डरो भी तो अपने डर को जाहिर मत होने देना।"

लड़की ने यह सुनकर कहा, "इस सलाह के लिए धन्यवाद, खरगोश भैया ! मैं ऐसा ही करूंगी।"

अब वे फिर आगे बढ़े और गांव की सरहद पर पहुंचे तो सरदार की बहन मिल गई। उसने पूछा, "तुम कहां जा रही हो ?" लड़की ने कहा, "मैं तुम्हारे

गांव जा रही हूं और मुझे विश्वास है कि तुम्हारा भाई मुझे पसन्द करेगा।"

उसने उत्तर दिया, "अच्छा चलो। अपने भाई के मकान तक मैं तुम्हें पहुंचा देती हूं। देखो, उसे देखकर डरना मत।"

लड़की सरदार की बहन के साथ चली और साथ आए लोग उसके पीछे-पीछे। गांव के सब लोग बाहर आ-आकर देखने लगे कि ये कौन लोग आए हैं। जब उस मकान तक पहुंची तो सरदार की मां बाहर आकर बोली, "ठीक है, तुम उससे विवाह करना चाहती हो तो पहले खाना पकाओ।"

लड़की तैयार हो गई। उसने बहुत महीन अनाज पीसा और खूब मन लगाकर बढ़िया रोटियां पकाईं। जब सूर्यास्त हो गया तो सहसा तेज़ी से आंधी चली। उसने सामने देखा कि एक भयानक नाग उसकी तरफ आ रहा है। लोग कहने लगे, "यह हमारा सरदार है।" लड़की डर गई। लेकिन उसने अपने डर को ज़ाहिर नहीं होने दिया। नागराज ने कहा, "खाना दो।" लड़की ने हिम्मत बांधकर रोटियां उसे दे दीं। उसने रोटियां खाते ही कहा, "ये तो बहुत ही स्वादिष्ट बनी हैं। बताओ, तुम मेरी पत्नी बनना चाहोगी?"

एक क्षण के लिए तो लड़की उत्तर न दे सकी, लेकिन फिर हिम्मत बांध-कर उसने कहा, "जी हां, मैं आपके लिए ही यहां आई हूं।"

उसके यह कहते ही नागराज का शरीर बदलने लगा। उस जगह एक सुन्दर युवक आ गया। वह बोला, "तुमने अपने शब्दों से मेरा शाप दूर कर दिया है।" सारा वातावरण खुशी से भर गया। लोग नाचने गाने लगे।

●●●

मुद्रक : मयूर प्रेस, बी-६६, जी. टी. करनाल रोड, इण्डस्ट्रियल एरिया, दिल्ली

संसार की लोककथाएं

संसार के प्रत्येक देश की अपनी लोक संस्कृति होती है जो अभिव्यक्ति के अन्य रूपों के साथ, वहां की लोककथाओं में विशेष रूप से व्यक्त होती है। इन लोककथाओं में वहां की अपनी परम्पराएं, जीवन-यापन के ढंग तथा विशिष्ट विचार अभिव्यक्ति पाते हैं। प्रस्तुत पुस्तक माला में इन लोककथाओं को, उन देशों तथा संस्कृतियों के जानकार विद्वान लेखकों ने, भारत के हिन्दी भाषी पाठकों के लिए सरल भाषा में लिखा है और श्रेष्ठ चित्रकारों ने उन देशों की कला परम्पराओं के अनुरूप इन कथाओं का चित्रण किया है।

मारिशस की लोककथाएं	प्रह्लाद रामशरण
तिब्बत की लोककथाएं	डॉ० नन्दकिशोर
पड़ोसी देशों की लोककथाएं	विजय राघव रेड्डी
जापान की लोककथाएं	रमेश बक्षी
इण्डोनेशिया की लोककथाएं	वीरेन्द्रकुमार गुप्त
बर्मा की लोककथाएं	योगराज थानी
नेपाल की लोककथाएं	कमला सांकृत्यायन
अफ्रीका की लोककथाएं	रमेश बक्षी

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली